कब उड़ जाए पँछी नही है इसका कोई ठिकाना विविध भजन

कब उड़ जाए पँछी,
नही है इसका कोई ठिकाना,
कब उड़ जाए पंछी नही है,
इसका कोई ठिकाना।bd।

तर्ज – चल उड़ जा रे पँछी।

कँकर पत्थर बीन के तूने,
सुन्दर महल बनाया,
लेकिन तेरा बँगला प्राणी,
तेरे काम न आया,
ये जीवन दो दिन का तेरा,
चलती फिरती माया,
छोड़ घोसला इक दिन बँदे,
पँछी को उड़ जाना,
कब उड़ जाए पंछी नही है,
इसका कोई ठिकाना।bd।

यह जीवन है घर भाड़े का,
इस पर न इतराना,
जब तक देता रहे किराया,
तब तक का आशियाना,
मालिक बन कर इस पर प्राणी,
हक न अपना जताना,
छोड़के घर को इक दिन बँदे,
तुझको पड़ेगा जाना,
कब उड़ जाए पंछी नही है,
इसका कोई ठिकाना।bd।

जग मे दिन और रात कमाई,
तू ने शोहरत दौलत,
लेकिन प्रभू के भजन की तूझको,
मिल न पाई फुरसत,
फिर न मिलेगी तुझको बँदे,
आज मिली जो मोहल्लत,
अँत समय इक दिन तुझे प्राणी,
बहुत पछताना पड़ेगा।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com

कब उड़ जाए पंछी नही है,
इसका कोई ठिकाना।bd।

कब उड़ जाए पँछी,
नही है इसका कोई ठिकाना,
कब उड़ जाए पंछी नही है,
इसका कोई ठिकाना।bd।

– भजन लेखक एवं प्रेषक –
श्री शिवनारायण वर्मा,
मोबा.न.8818932923

वीडियो उपलब्ध नहीं।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरुर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - https://www.bhajandiary.com